डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(नेशनल अकादमी ऑफ़ लेटर्स)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

सा.अ./61/15/बीएस/पीएन/

21 दिसंबर 2016

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी भाषा सम्मान

साहित्य अकादेमी वर्ष 2015 के लिए उत्तरी तथा दक्षिणी क्षेत्रों से कालजयी एवं मध्यकालीन साहित्य में योगदान हेतु दो लेखकों/विद्वानों तथा अकादेमी द्वारा गैर–मान्यताप्रदत्त भाषाओं कुडुख, लद्दाखी, हल्बी एवं सौराष्ट्र में योगदान हेतु छह विद्वानों/लेखकों को भाषा सम्मान प्रदान करने की घोषणा करते हुए अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव कर रही है।

साहित्य अकादेमी कालजयी एवं मध्यकालीन साहित्य के क्षेत्र में निम्नलिखित दो लेखकों/विद्वानों को भाषा सम्मान प्रदान करेगी :–

1. **डॉ. आनंद प्रकाश दीक्षित** को कालजयी एवं मध्यकालीन साहित्य (उत्तरी) में उनके महत्त्वपूर्ण योगदान हेतु।
2. **श्री नागल्ला गुरुप्रसाद राव** को कालजयी एवं मध्यकालीन साहित्य (दक्षिणी) में उनके महत्त्वपूर्ण योगदान हेतु।

निम्नलिखित लेखकों/विद्वानों को भी साहित्य अकादेमी द्वारा गैर–मान्यताप्रदत्त भाषाओं में उनके योगदान हेतु भाषा सम्मान प्रदान किया जाएगा :–

1. **डॉ. निर्मल मिंज** कुडुख भाषा तथा साहित्य की समृद्धि के लिए दिए गए उनके बहुमूल्य योगदान हेतु भाषा सम्मान ग्रहण करेंगे।
2. **प्रो. लोजांग जम्सपाल** तथा **श्री गिलोंग थुपस्तान पलदान** संयुक्त रूप से लद्दाकी भाषा तथा साहित्य की समृद्धि के लिए दिए गए उनके बहुमूल्य योगदान हेतु भाषा सम्मान ग्रहण करेंगे।
3. **श्री हरिहर वैष्णव** को हल्बी भाषा तथा साहित्य की समृद्धि के लिए दिए गए उनके बहुमूल्य योगदान हेतु भाषा सम्मान के लिए चुना गया है।
4. **डॉ. टी. आर. दामोदरन** तथा **श्रीमती टी.एस. सरोजा सुंदरराजन** संयुक्त रूप से सौराष्ट्र भाषा तथा साहित्य की समृद्धि के लिए दिए गए उनके बहुमूल्य योगदान हेतु भाषा सम्मान ग्रहण करेंगे।

प्रत्येक भाषा सम्मान के अंतर्गत 1,00,000 रु. की राशि, एक ताम्र फलक तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है। संयुक्त विजेताओं के मामले में सम्मान राशि दोनों विजेताओं द्वारा समान रूप से साझा की जाएगी। सभी लेखकों को यह सम्मान भविष्य में आयोजित होनेवाले विशेष समारोह में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष द्वारा प्रदान किए जाएँगे।

भाषा सम्मान विजेताओं के जीवन परिचय अनुलग्नक 'क' में दिए गए हैं। निर्णायक मंडल के जिन सदस्यों की अनुशंसाओं के आधार पर भाषा सम्मान घोषित किए गए हैं, उन सदस्यों के नाम इसी के साथ संलग्न अनुलग्नक 'ख' में दिए गए हैं।

हम आपके अत्यंत आभारी होंगे, यदि आप कृपया अपने प्रतिष्ठित समाचार–पत्र/चैनल में यह समाचार प्रकाशित/प्रसारित करेंगे।

(के. श्रीनिवासराव)

संलग्न : उपरोक्त

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http://www.sahitya-akademi.gov.in

अनुलग्नक 'क'

साहित्य अकादेमी भाषा सम्मान विजेताओं का संक्षिप्त जीवन परिचय

कालजयी तथा मध्यकालीन साहित्य (उत्तर) :

डॉ. आनंद प्रकाश दीक्षित प्रख्यात हिंदी एवं संस्कृत विद्वान हैं। आपने कालजयी तथा मध्यकालीन साहित्य के क्षेत्र में, विशेषरूप से रस सिद्धांत जैसे जटिल विषय पर बहुमूल्य योगदान दिया है। इसके अतिरिक्त आपने मध्यकालीन भक्ति तथा रीति साहित्य पर प्रभूत कार्य किया है। आपने कई मध्यकालीन साहित्य पांडुलिपियों का संपादन किया है। 94 वर्ष की आयु में भी डॉ. दीक्षित साहित्यिक एवं अनुसंधान कार्यों से जुड़े हैं।

कालजयी तथा मध्यकालीन साहित्य (दक्षिण) :

श्री नागल्ला गुरुप्रसाद राव प्रख्यात तेलुगु लेखक एवं विद्वान हैं। आपने लोयोला कॉलेज, विजयवाड़ा, जे.के. सी. कॉलेज, गुंटूर आदि में तेलुगु भाषा का अध्ययन किया तथा आप प्राचार्य के पद से सेवानिवृत्त हुए। सेवानिवृत्ति के उपरांत आपने दो दशकों तक सिद्धार्थ कलापीठम, विजयवाड़ा में सचिव के रूप में कार्य किया। नागल्ला ने साहित्यिक समालोचना संबंधी 100 से अधिक निबंध लिखे हैं तथा 300 से अधिक कालजयी एवं आधुनिक साहित्यिक कृतियों की समीक्षा की है। आपकी कुछ उल्लेखनीय कृतियाँ हैं –*सलिवाहानुडु, इद्दारू तेलुगु महाकावलु* । आपको यार्लागड्डा वेंकन्ना चैरिटीज़, चैन्नै द्वारा 'सुधी रत्न' तिक्काना तिरुनल्ला समिति, नेल्लौर तथा अन्य संस्थाओं द्वारा विभिन्न सम्मनों से विभूषित किया गया। आपको वाट्टिकोंडा विशालाक्षी कल्चरल ट्रस्ट, गुंटूर तथा दुव्वूरी रामी रेड्डी विज्ञान समिति द्वारा पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है।

गैर–मान्यता प्राप्त भाषा कुड़ुख :

डॉ. निर्मल मिंज ने कुड़ुख भाषा और साहित्य के उन्नयन के लिए बहुमूल्य योगदान दिया है। आपने अध्यापन, अध्ययन तथा छोटानागपुर जनजातीय भाषाओं में अनुसंधान द्वारा इस जनजातीय भाषा को मुख्यधारा में लाने का सराहनीय कार्य किया है। आप ग्रोस्सनर कॉलेज के संस्थापक प्रधानाचार्य हैं। आपके प्रकाशित कृतियों में *झरिया पंडी, इन्नेलंता पाइरी उरूबनी, खंड – I एवं II, कुड़ुख ग्रामर, आदिवासी प्रोब्लम्स एंड दियर परमानेंट सॉल्यूशंस* शामिल हैं। आपको कई पुरस्कारों एवं सम्मानों जैसे–नागपुरी इंस्टीच्यूट झारखंड द्वारा हीरक सम्मान (2014) अखिल भारतीय महासभा द्वारा आदिवासी रत्न (2011) आदि अलंकरणों से सम्मानित किया गया है।

क्रमशः...

गैर–मान्यता प्राप्त भाषा लद्दाखी :

प्रो. लोजांग जम्सपाल प्रख्यात लद्दाख़ी लेखक एवं विद्वान हैं। आपकी प्रकाशित कृतियों में *लामा तशूलखरिम्स नइमा की जीवनी, क्लासिकल तिब्बतन ग्रामर, द रेंज ऑफ़ द बोधिसत्त्व, हिंदी तिब्बतन शब्दकोश* शामिल हैं। आप इंटरनेशनल बुद्विस्ट कॉलेज, थाईलैण्ड में कालजयी तिब्बती भाषा, दर्शनशास्त्र तथा साहित्य के प्रोफ़ेसर हैं। आप मोनास्टिक स्कूल ऑफ़ तिब्बतन स्टडीज़, लद्दाख के संस्थापक हैं।

श्री गिलोंग थुपस्तान पालदन प्रख्यात लद्दाख़ी लेखक एवं विद्वान हैं। आपकी कई कृतियाँ प्रकाशित हैं जिनमें *यीदे शादपा, छाग्स राब्स जोन कुन नसांग, लज़ोसगर, जीवे, छोरटन, लद्दाख़, टिंडा, बोंगबुल कनाल* उल्लेखनीय हैं। आपने चार पुस्तकों का सह–लेखन भी किया है। आपको जे. एंड के. एकेडमी आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजेज़ द्वारा आजीवन उपलब्धि सम्मान एवं श्रेष्ठ पुस्तक पुरस्कार, राज्य अकादमी द्वारा श्रेष्ठ पटकथा लेखक आदि सम्मानों से विभूषित किया गया है।

गैर–मान्यताप्राप्त भाषा हल्बी :

श्री हरिहर वैष्णव हल्बी भाषा के विख्यात मौलिक लेखक तथा हल्बी लोकसाहित्य एवं संस्कृति के समर्पित अध्येता हैं। अंग्रेजी, हल्बी तथा हिंदी में *लक्ष्मी जगार* पर किया गया आपका मौलिक लेखन क्षेत्रीय तथा राष्ट्रीय फलक पर प्रतिष्ठित हुआ है। आपकी कृतियों में बस्तर की वाचिक कथाएँ, मोहभंग, राजा और बेल कन्या, बस्तर के तीज त्यौहार, बस्तर का लोकसाहित्य, अंधकार का देश आदि शामिल हैं। आपने अनेक पुस्तकों का संपादन भी किया है। आपको कवि उमेश शर्मा सम्मान, आंचलिक साहित्यकार सम्मान तथा कई अन्य पुरस्कार–सम्मान प्राप्त हैं।

गैर–मान्यताप्राप्त भाषा सौराष्ट्र :

डॉ. टी. आर. दामोदरन सौराष्ट्र भाषा के प्रख्यात लेखक तथा विद्वान हैं। आपने लाइफ ऑफ वेंकटरमन भागवतर, सौराष्ट्र सुलिखनी, तमिळ–अंग्रेजी–सौराष्ट्र शब्दकोष के अतिरिक्त अन्य कई पुस्तकें लिखी हैं। आपके द्वारा चार पुस्तकों का संपादन तथा चार का सह–संपादन किया गया है। आपकी उल्लेखनीय कृतियों में *आस्थो, सौराष्ट्र तत्ता, संत नाटनगोपाल, सौराष्ट्र वीयासार* शामिल हैं।

श्रीमती टी. एस. सरोजा सुंदरराजन सौराष्ट्र भाषा की प्रख्यात विदुषी, अनुवादिका तथा लेखिका हैं। आप बहुप्रातिभ है तथा आपने सौराष्ट्र भाषा, लिपि, साहित्य तथा संस्कृति के विकास से संबंधित कई सम्मेलनों, संगोष्ठियों तथा कार्यशालाओं में भाग लिया है। आप तमिळ साहित्य के अनुवाद के अलावा संस्कृत की भी सफल अनुवादिका हैं। आपकी उल्लेखनीय कृतियों में *देवी माहात्म्य* तथा *योगेंद्रुन मोन्नु सिंगारू लातून* शामिल हैं। आप भगवद्गीता (संस्कृत और सौराष्ट्र), *ललिता सहस्रनाम, सौंदर्यलहरी, कनकधारा स्तोत्रम्, कंद षष्ठी, सौराष्ट्र जगद्गुरु श्री नाटनगोपाल नायकी* तथा *कीर्तन* आदि की विशेषज्ञ हैं।

साहित्य अकादेमी भाषा सम्मान के लिए निर्णायक मंडल के सदस्यों की सूची

भाषा	निर्णायक मंडल के सदस्य
सीएमएल (उत्तरी)	प्रो. रामजी तिवारी डॉ. सत्यव्रत शास्त्री डॉ. जसपाल सिंह
सीएमएल (दक्षिणी)	श्री सा. कंदासामी प्रो. वीरेश बाडीगर डॉ. सलाका रघुनाथ शर्मा
कुडुख	फ. अल्बीनूस मिंज डॉ. शांति खालखो डॉ. कर्मा ओराँव
लद्दाखी	श्री नवाङ् छीड़ग शेकस्पो डॉ. जाम्याङ गैलसन श्री नवाङ गायत्सो
हल्बी	श्री वसंत निर्गुणे श्रीमती शकुंतला तरार श्री महेंद्र मिश्र
सौराष्ट्र	डॉ. राजेश मैकवान श्री टीं. डी. ईश्वरमूर्ति श्री के. आर. सेतुरमन